संत गरीबदास का व्यक्तित्व एवं कृतित्व

* हरिओम शर्मा

शोधपत्र-इतिहास

गरीबदास का सन्त परम्परा में एक विशेष स्थान रहा है। ये कबीर के अवतार माने जाते हैं, और कबीर ही ये को अपना गुरु मानते थे। सन्त कबीर का जन्म सन्त गरीबदास के अवतरण से लगभग दौ सौ वर्ष पहले हुआ था। ऐसा माना जाता है कि कबीर ने इन्हें स्वप्न में ही दीक्षा दी थी। गुरुनानक की तरह इन्होने भी अपना कोई गुरु नहीं बनाया क्योंकि अवतारी पुरुष को गुरु बनाने की आवश्यकता नहीं होती अपितु ये स्वयं ही अपने गुरु थे।

1. जन्मः हरियाणा की धरती पर बसा छुड़ानी गांव धन्य है। जहां गरीबदास जैसा अवतारी पुरुष अवतरित हुआ। रोहतक जिले के गांव करौंथा में हरदेवा सिंह धनखड़ नाम का जाट रहता था। उसकी पत्नी श्रीमती दयाली देवी बड़ी पवित्र आत्मा की नारी थी। उसका लड़का बलराम था। बलराम की शादी छुड़ानी गांव के धनी शिवपाल की पुत्री रानी से हो गई। शिवपाल के घर अन्य कोई पुत्र न होने के कारण उन्होने बलराम के परिवार को अपनी सम्पत्ति की देखभाल हेतु अपने घर बुला लिया। शादी के बारह वर्ष बीत गए लेकिन बलराम को कोई सन्तान न हुई। बलराम के पिता तथा ससुर ने भगवान की स्तुति प्रारम्भ कर दी ताकि भगवान उनके घर पुत्र दे दें। एक बार एक साधु छुड़ानी गांव में आया। तब बलराम के ससुर संत से मिले तथा इन्हें भोजन कपड़े आदि लेने के लिए अनुरोध, किया जो स्वीकार कर लिया गया। इसके साथ–साथ उसकी पुत्री रानी को एक पुत्र का आशीर्वाद देने की विनती की। सन्त ने कहा कि तुम्हारी पुत्री रानी तथा तुम्हारा दामाद बलराम कोई साधारण व्यक्ति नहीं, इनके घर एक महान् आत्मा का जन्म होगा। सन्त के यह बतलाने के दस माह उपरान्त ही वैशाख की पूर्णिमा के दिन 1717 ई0 में रानी ने एक पुत्र को जन्म दिया। घर पर पुत्र का जन्म होने से समस्त परिवार खुशियों से झूम उठा। इस बच्चे का नाम सनातन धर्म के अनुसार गरीबदास रखा गया। गरीबदास गांव के सभी व्यक्तियों को बहुत प्यारा था। इसके साथी तथा माता–पिता इसे 'गरीब' नाम से पुकारते थे। इस बच्चे में बचपन से ही धार्मिक संस्कार व्याप्त थे। यह अपने साथियों को एक ऊंचे स्थान पर बैठ कर उपदेश दिया करता था कि चोरी मत करो, किसी को गाली मत दो, हमेशा सच बोलो तथा अपने माता–पिता का आदर करो। गरीबदास ने गरीब किसानों के बीच रहते हुए गरीबी का जीवन व्यतीत किया।

1.2 शिक्षा एवम् गृहस्थ जीवन : संत गरीबदास जी की शिक्षा के सम्बन्ध में अधिक जानकारी प्राप्त नहीं होती। परन्तु सन्तों के संग से इन्होने मध्यकालीन धार्मिक साहित्य की अच्छी जानकारी प्राप्त कर ली थी। इन पर सबसे अधिक प्रभाव संत कबीरदास का था। जैसे :–

"गरीबदास ऐसा हम मिल्या, सुरति सिन्धु के तीर/सब सतंन सिरताज है, सतगुरु अदल कबीर/गरीब अलल पखं अनुराग है, शून्य मण्डल रहै यीर।/दास गरीब उधारिय, सतगुरू मिले कबीर"।

संत गरीबदास जी का विवाह बरौना गांव के चौधरी न्यादर सिंह की पुत्री मोहनी से हुआ। इनके चार पुत्र तथा दो पुत्रिंया थी। इनके पुत्रों के नाम जैतराम, तुरतीराम, अंगदराय तथा आसाराम और पुत्रियो के नाम दिलकौर तथा ज्ञानकौर। जैतराम और तुरतीराम दोनों जुड़वा भाई थे, जिन्होंने कभी भी इनकी भक्ति मे बाधा नहीं डाली। इन्होंने गृहस्थ धर्म अच्छी तरह निभाया। ये कहते थे कि भगवान की प्राप्ति के लिए सन्यास जरूरी नहीं है, गृहस्थी में रहकर भी भक्ति की जा सकती है। अतः ये अच्छे गृहस्थ थे। गरीबदास जी बचपन में बहुत मधुर गाते थे। इसके साथ–साथ उन्होंने वाद्ययन्त्र को भी बजाना सीख लिया था। एक बार संत ने इन्हें बजाने के लिए एक सारंगी भेंट में। गरीबदास जी इतनी मधुर सारंगी बजाते थे कि लोग इन पर इस प्रकार झूम जाते थे, जिस प्रकार बीन के लहरे पर सांप झूम उठता है।

1.3 विचार मत : सन्त गरीबदास ने कोई नया सम्प्रदाय अथवा मजहब नही बनाया। कट्टरता या मजहबी जनून तो इनको छू भी नहीं पाया। इन्होंने अपने गुरु की तरह आध्यात्मिकता का उपदेश मनुष्य जाति को दिया। धार्मिक

* शोधार्थी, द्रविड विश्वविद्यालय कुप्पम, आन्ध्रप्रदेश

होने का दिखावा अर्थहीन परम्पराएँ और रितिरिवाज इनको मान्य नहीं थे। इन्होंने हिन्दु धर्म को मर्यादाओं में रहते हुए एक निराकार परमात्मा का उपदेश दिया है। निर्गुण भक्ति परम्परा के ये एक महान भक्त और साधक थे।

संत गरीदास विभिन्न देवी–देवताओं में विश्वास नहीं रखते, इनका उपदेश था, परमात्मा एक है, जिसको दुनिया के लोग विभिन्न नामो से याद करते हैं। सन्त गरीबदास परमात्मा को 'नूर' कहते हैं। जैसे प्रकाश सर्वत्र व्याप्त है उसी प्रकार भगवान का नूर हर जगह प्रकाश फैलाता है। गरीबदास का उपदेश था कि मनुष्य की कोई जाति नहीं हैं, सब मनुष्य समान है। इनका मत था कि जब परमात्मा की कोई जाति नहीं हैं। तो एक मानव की क्या जाति हो सकती है? **"जात–पात पूछे न कोई, हरि को भजे सो हरि को होई"।** इन्होंने निर्गुण भक्ति पर बल दिया तथा अवतार वाद का खण्डन किया। ये राम और कृष्ण को एक निर्गुण परम सत्ता के अन्तरभूत मानते हैं। निर्गुण परम्परा के सन्तों के उपदेशों को लोगो तक पहुंचाना इनका उद्देश्य था। आध्यात्मिकता के नाम पर अनेक प्रकार के पाखण्डों का भी इन्होंने विरोध किया। मध्यकालीन सन्तों की तरह इनकी वाणी जनमानस की वाणी थी। इन्होंने कहा है कि मूर्तिपूजा, तीर्थयात्रा और रामक भण की मूर्तियों को ईश्वर समझकर उनकी पूजा नहीं करनी चाहिए। इनके अनुसार घर–बार छोड़ने से परमात्मा की प्राप्ति नहीं होती संसार में रहकर ही सांसारिक कृत्यों को निभाते हुए परमात्मा को अनुभूति की जा सकती है। परमात्मा किसी विशेष स्थान में नहीं है, वह सबके भीतर है। समय के साथ–साथ लोग सन्त के मूल उद्देश्य को भूल जाते हैं और उनके नाम पर बाहरी पूजा–विधान का आडम्बर खड़ा हो जाता है। इस प्रकार तरह–तरह की प्रथाएँ और रीति–रिवाज आरम्भ हो जाते हैं। इतिहास इस बात का साक्षी है कि आज तक ऐसा ही होता आया है कि जिस सन्त ने लोगों को सच्ची राह दिखाई उन्ही लोगों ने ही उस राह पर खड्डे खोद दिए। इनके सामने अमीर–गरीब, छोटा–बड़ा, काला–गोरा, ऊंच–नीच का कोई अन्तर नहीं था। ये सभी को प्रेम से नाम रस पिलाते थे। इनका प्याला अमृत से भरा था, पीने की हिम्मत चाहिए थी।

4. देहान्त : संत गरीबदास की मृत्यु की निश्चित तिथि उनके पुत्र जैतराम के अनुसार–संवत् 1835 में भादो महीने के शुक्ल पक्ष की दूज को संत गरीबदास जी स्वर्ग सिधार गये थे।

"संवत अठारसौ पैंतीस, परलोक सिधारे हैं जगदीसा।/मास भादवा दूज कहावै, पखारा सुकल पक्ष आवै।।"[1]

5. दन्त कथायें :

1. संत गरीबदास के सन्दर्भ में ऐसी दंतकथा है कि ये जन्म लेते ही खेलने लग गये। जिससे इसके माता–पिता अचम्भित हो गये। फिर ये कुछ समय के लिए गुम हो गये। माता–पिता की प्रार्थना के उपरान्त ये दोबारा बालक रूप में आ गए।

2. संत गरीबदास जी के जन्म के सन्दर्भ में एक दन्तकथा यह भी है कि इनके जन्म से तीन माह पूर्व जब इनकी माता कुएँ पर पानी लेने के लिए गई तब दो सन्त आये और उन्होंने इनकी माता के चरण स्पर्श किये। इनकी माता द्वारा स्पर्श का कारण पूछने पर इन सन्तों ने उत्तर दिया– 'हमने उस पवित्र आत्मा के चरणों का स्पर्श किया है जो आपके गर्भ से जन्म लेने वाला है'।

3. ऐसा कहा जाता है कि एक बार गरीबदास अपनी मौसी के घर गये। जब इनकी आयु करीब दस या बारह वर्ष की थी। इनका मौसेरा भाई इन्हें एक रामानन्दीसंत बुद्धादास के पास ले गया। उन्हाने गरीबदास को शिष्य बनाते हुए तिलक किया तथा इनके गले में एक कठीं पहना दी और तन्त्र पूजा करने तथा पवित्र धामों की यात्रा करते हुए रामानन्द के विचारों का प्रचार करने के लिए कहा परन्तु गरीबदास पर तो पहले ही कबीर और दादू का प्रभाव पड़ चुका था। इस प्रकार उन्होंने कर्मकाण्ड का खण्डन करते हुए कहाः–

"करम काण्ड उरले ब्योहारा।
नाम लेय से गुरू, हमारा।।"[2]

4. एक बार दिल्ली के नवाब मुहम्मद–शाह ने गरीबदास को अपने न्यायालय में बुलाया। जब राजा का सन्देशवाहक गरीबदास को बुलाने के लिए आया तो गरीबदास जी ने यह कहा कि राजा के न्यायालय में दो प्रकार के व्यक्ति जाते हैं। एक तो वे जिसने कोई जुल्म किया हो तथा दूसरे वे जिसने चापलूसी करनी हो। वह इस प्रकार के दोनों व्यक्तियों में से नहीं है अर्थात् जाने से इन्कार कर दिया। अपने आदमी से नवाब ने जब संत गरीबदास के विचार सुने तो वह समझ गया कि संत जी महान् विद्वान् हैं। अतः वे संत के पास और चले गये। यह अनुरोध किया कि वह उसे आशीर्वाद दें ताकि उसका राज्य स्थिर रह सके। गरीबदास जी ने राजा को बताया कि आप तीन शर्तों का पालन करो, तुम्हारा राज्य और विस्तृत होगा। ये तीन शर्तें थी :–

1. वह गोहत्या को बंद करें।

2 वह केवल उन्हीं नारियों को अपनी पास रखे जो कानूनी रूप से उसकी हैं, अन्य सभी नारियों को रिहा कर दे।

3. वह खाद्य पदार्थों पर किसी प्रकार का कोई कर न लगाये। राजा इन शर्तों पर सहमत होता, इससे पहले दरबारियों ने गरीबदास को बन्दी बना लिया। जिससे मुगल साम्राज्य तहस–नहस हो गया। राजदरबार के कटु अनुभव के लिए गरीबदास जी ने अपनी वाणी में इस प्रकार कहा है।

"गरीबदास राजद्वार ना जाइए, सुन चेला यह सीख।/खात भजन में भंग हो, रक्त सरूपी भीख।।[3]

5. संत गरीबदास जी के बारे में एक घटना यह भी प्रचलित है कि एक बार वे घोड़े पर चढ़कर छुड़ानी से कलोई गांव गये। वापिस आते समय जब भालौट के घोर जंगल से गुजर रहे थे, तब उनका सामना सजना नाम के डाकू से हुआ यह डाकू भालौट गांव का था। इसका व्यक्तियों को लूटने का तरीका अनोखा था। वह पहले व्यक्ति की हत्या करता था तथा बाद में उसको लूटता था। इसका एक बड़ा गिरोह भी था। गरीबदास जी ने उन्हे क्षमा करते हुए कहा कि वह नेकी करें, नेक कमाई से अपना गुजारा करे तथा नेक भाव से भगवान का स्मरण करें यथाः–

"सुनियों सतं सुजान, गर्व नहीं करना रे।।/च्यारीं दिनों की चिहर बनी है, आखिर तोकूं मरना रे।/तू जानै मेरी ऐसौ निबेहगी, हरदम लेखा भरना रे।/खालै पी लै विलासि ले रे हसां जोड़ि–जोड़ि नहीं धारनारे।/दास गरीब मैं साहिब, नहीं किसी त्यौ अरना रे"।[4]

6. संत गरीबदास जी बारे में यह भी प्रचलित है कि एक बार फसल कटाई के दिनों में इसके माता–पिता दोनों फसल की कटाई कर रहे थे साथ में गरीबदास गायें चरा रहा था। वह गायों को चरता हुआ छोड़कर अपने माता–पिता के पास आ गया। इनकी माता को काफी प्यास लगी हुई थी। यह सुनकर गरीबदास ने कहा माता जी घड़ा तो पानी से भरा हुआ है। माता का घड़े को पानी से भरा देखकर आश्चर्य चकित रह गई। उसने गरीबदास से पूछा कि तू यहां से कहीं गया ही नहीं तब घड़ा पानी से कैसे भर गया। गरीबदास ने उत्तर दिया कि माता जी हम पानी पर ही रहते है। यह कहकर उन्होने थोड़ी सी मिट्टी अपनी उंगलियों में उठाई तब वहां पानी निकल आया।[5]

7. एक बार फर्रूखनगर के नवाब ने छुड़ानी धाम से आस–पास के गांवो को लूटा। तब गांवो के लोगो से उसने गरीबदास की प्रशंसा सुनी। उसने गरीबदास की महिमा सुनकर क्रोधित होते हुए उसे पकड़ कर उसके दरबार में ले आने का आदेश दिया। तभी गरीबदास अपने पांच शिष्यों के साथ नवाब के पास पहुंचा। नवाब ने उसे भूखे शेर के पिंजरे में डालने का आदेश दिया। जन समूह ने इस आदेश का विरोध किया परन्तु गरीबदास ने उन्हें यह कहकर कि– **"जाको राखें साईया मार सके न कोय"** शान्त किया। गरीबदास जी जैसे ही शेर के पिंजरे में दाखिल हुए शेर ने उन्हें पैरों को चाटना शुरू कर दिया।

8. एक बार कबीर का एक अनुयायी 'मन्शाराम' अल्मोड़ा के नजदीक एक पहाड़ी पर तपस्या था। उसने अपने शिष्य 'हान्दी भांगड़ा' को बताया कि कबीर ने एक छोटे से गांव छुड़ानी में गरीबदास के रूप में जन्म लिया है। हान्दी उस सच्चाई को जानने के लिए छुड़ानी गांव में पहुंचा। कुछ समय तक गरीबदास के पास रहा। उन्होंने निष्कर्ष निकाला कि वास्तव में गरीबदास कबीर के अवतार हैं।[6]

9. कबीर के दो प्रमुख शिष्य अर्जुन जो गरीबदास जी के जन्म तक जीवित रहे। कबीर जी ने इन दोनों को बताया था कि जब मैं दोबारा धरती पर गरीबदास के रूप में जन्म लूंगा, तब तुम्हारा कल्याण करूंगा। ये दोनों एक बैलगाडी में गरीबदास के पास छुड़ानी पहुचें तथा गरीबदास जी के दर्शन करने के उपरान्त अपना शरीर रूपी चोला त्याग कर मोक्ष प्राप्त किया।[7]

10. कान्हा राम नाम का आसौदा गांव का एक धनी व्यपारी था। उसका लड़का बचपन से ही तपस्वी प्रवृत्ति का था। धनी एवं संतोष दास अकेला पुत्र होने के कारण उसने इस लड़के की शादी एक सेठ की लडकी लक्ष्मी बाई से तय कर दी परन्तु सतोंषदास घर से भागकर गरीबदास जी की शरण में आ गाया। कोई भी व्यक्ति उसे शादी के लिए मना न सका। इस धनी व्यक्ति ने सोचा इस गरीबदास ने उसके लड़के को बिगाड़ दिया है गरीबदास ने लक्ष्मीबाई को देखकर सतोंषदास को यह विश्वास दिलाया कि यह लड़की पति के धार्मिक कार्यों में कोई बाधा नहीं डालेगी। उस व्यक्ति ने घर पर ही रहकर इतनी गहराई तक ध्यान लगाने में सफलता प्राप्त की उसे परमात्मा के दर्शन हो गए।

11. बादली गांव के चौधरी 'राम सहाय' ने सन्त से मिलने का निश्चय किया। यह चौधरी गरीबदास को यह दिखाना चाहता था कि उसका भी समाज में ऊंचा स्थान है। जब चौधरी गरीबदास से मिला, तब गरीबदास ने इन्हें चारपाई पर बैठने के लिए कहा तथा आप नीचे फर्श पर बैठ गया। तब चौधरी ने चारपाई पर असुविधा महसूस की तथा वह भी गरीबदास के साथ फर्श पर बैठ गया। यह चौधरी इसके बाद गरीबदास का भक्त बन गया।

12. एक बार मीठे पानी की कमी को दूर करने के लिए इनके पिता ने एक कुआं खोदने का निश्चय किया। इस पर

आने वाली लागत की भी कोई परवाह नहीं थी। यथा स्थान धार्मिक संस्कार करने के उपरान्त कुआं खोदना प्रारम्भ किया। संत गरीबदास ने अपने पिता जी से अनुरोध किया कि आप इस स्थान पर कुआं खोदे। परन्तु गरीबदास की बात न मानकर कुआं वही पर खोदा गया। जिसका पानी खारा निकला। इसके बाद गरीबदास द्वारा बताये गये स्थान पर कुआं खोदा गया। जिसका पानी मीठा निकला। इस प्रकार इनके पिता जी तथा अन्य ग्रामीण गरीबदास जी की बातों पर विश्वास करने लगें।[1] एक बार संत गरीबदास ने एक भूकम्प की भविष्यवाणी की। यह भूकम्प निश्चित समय एवं निश्चित दिन को ही आया। फलस्वरूप संत गरीबदास की भविष्यवाणी से जानमाल का बहुत अधिक नुकसान होने से बच गया।[2]

14. संत गरीबदास जी के बारे में कहा जाता है कि एक रामानन्दी बागड़ी छुड़ानी गांव में रहते थे एक बार उनकी झोपड़ीयों में आग लग गई साथ में इस आग का समस्त गांव में फैलने का संकट मंडराने लगा। तब संत गरीबदास आधी जली हुई झोपड़ी में कूद गये। लोगो ने समझा गरीबदास अग्नि में जल जायेगें परन्तु ऐसा न होकर झोपड़ियों में जल जायेगें। की आग बंद हो गई। इस प्रकार संत गरीबदास ने समस्त गांव को जलने से बचा लिया।[3]

15. संत गरीबदास के बारे मे यह भी प्रचलित हे कि वे गाय चराते थे। इनकी गाय एक किसान के जौ के खेत में घुस गई तथा उस फसल को नष्ट कर दिया। किसान ने इसकी शिकायत नवाब से कर दी। कहते है जब नवाब साहब ने फसल का निरीक्षण किया तब पाया कि खेत में फसल ज्यों की त्यों खड़ी है उसे कोई किसी तरह का नुकसान नही हुआ। परिणाम स्वरूप शिकायत करने वाला अचम्भित रह गया।[4]

16. एक अन्य दन्त कथा है कि एक बार गरीबदास जी जंगल में गायें चरा रहे थे तभी वहां एक शेर आ गया। सभी गांये शेर को देखकर इधर–उधर भागने लगी, परन्तु गरीबदास निर्भय होकर शेर के सामने खड़े रहे। मालिक को इस प्रकार देखकर सभी गायें भी एक गोला बनाकर शेर से लड़ने के लिए खड़ी हो गई। शेर किसी को भी कुछ कहे बिना वहां से गरीबदास दास के आदेश पर दूसरे जंगल में चला गया।

1.6. कृतित्व : संत गरीबदास जी ने अपनी अमृतवाणी का उच्चारण वि.स. 1797 (1740) से प्रारम्भ किया। इसके बाद कुछ समय पश्चात् संत जी की महिमा सुनकर राजस्थान से दादू पंथी महात्मा श्री स्वामी गोपाल दास जी इनके दर्शनार्थ छुड़ानी गांव पंहुचे। वे इनकी वाणी सुनकर अति प्रभावित हुए और इनसे लिपिबद्ध करने की आज्ञा मांगी। संतजी की स्वीकृति मिलने पर उन्होंने इनकी अमृतमयी वाणी को इनके साथ रहकर उनके ब्रह्मलोक गमन करने तक लिपिबद्ध किया। संत जी के ब्रह्मलोक गमन करने के पश्चात् इनके शिष्यों और पोते शिष्यों ने इनकी अमृतमयी वाणी का संग्रह करके हस्तलिखित ग्रन्थ तैयार किए। जिनका विवरण इस प्रकार है :– **1.** पहला हस्त लिखित ग्रन्थ–श्री गरीबदास जी के शिष्य, पूर्ण दास जी के शिष्य श्री केवल दास जी ने सतगुरु जी ब्रह्मलोक गमन के दस वर्ष पश्चात् वि.स. 1845 में लिखा। **2.** दूसरा हस्त लिखित ग्रन्थ वि.स. 1856 में स्वामी देवादास के शिष्य स्वामी बिशन दास द्वारा लिखा गया। **3.** तीसरा हस्त लिखित ग्रन्थ वि.स. 1873 में स्वामी मेहरदास जी के शिष्य स्वामी बूटा दास द्वारा लिखा गया। इन तीनों हस्त लिखित ग्रन्थों को सतगुरु, भूरी वालों के समय से ही जिल्द बाधंकर सुरक्षित रखा गया है। इन्ही ग्रन्थों की सहायता से अब 'श्री सतगुरु ग्रन्थ साहब' ग्रन्थ रचा गया है। इनका छापे का ग्रन्थ सर्व प्रथम स्वामी अजरानन्द जी रमता राम ने प्रथम संस्करण वि.स. 1981 में (1924 ई.) में प्रकाशित करवाया। द्वितीय प्रकाशन वि.स. 2021 (1964 ई.) में श्री राम निकेतन ट्रस्ट भूपतवाला हरिद्वार के संस्थापक स्वामी धर्म स्नेही जी परमहंस द्वारा ग्रन्थ साहिब दो भागों में प्रकाशित करवाया गया। जिसका शोध कार्य स्वामी श्याम सुन्दर दास शास्त्री हरिद्वार तथा स्वामी चेतन दास शास्त्री कैरो वालों के द्वारा किया गया।

तृतीय प्रकाशन :– श्री ब्रह्मसागर के सुयोग्य शिष्य स्वामी जगदीश्वरानन्द के शिष्य स्वामी स्वरूपानन्द ने वि.सी. 2030 (1973 ई.) में बड़े अक्षरो में श्री ग्रन्थ साहिब का प्रकाशन करवाया।

चतुर्थ प्रकाशन :–स्वामी धर्म स्नेही जी ने वि.स. 2053 (1996 ई.) में पुन तृतीय संस्करण की प्रतिलिपि छपवाई।

पंचम प्रकाशन :– इनकी अमृतमयी वाणी का पंचम प्रकाशन "श्री सतगुरु ग्रन्थ साहिब" नाम से 2054 (1997 ई.) में फाल्गुन शुक्ला द्वादशी को स्वामी चरन दास ब्रह्मचारी जी ने करवाया।